

20-समयदान ही युग-धर्म

अध्याय 1: दान और उसका औचित्य

प्रश्न 1: 'दान' का वास्तविक अर्थ क्या है और इसकी तुलना पाप से कैसे की गई है?

उत्तर: 'दान' का वास्तविक अर्थ है 'देना'। यह ईश्वर द्वारा दी गई क्षमताओं को विकसित करके दूसरों तक पहुँचाना है, जिसे पुण्य-परमार्थ या सेवा कहा जाता है। इसके विपरीत, दूसरों से लेना या उनके अधिकारों का अपहरण करना पाप है। पाप की प्रतिक्रिया नरक के रूप में वर्णित की गई है, जबकि पुण्य स्वर्गीय परिस्थितियाँ बनाता है।

प्रश्न 2: सच्चा दान क्या है और धनदान को इसका प्रतीक मात्र क्यों कहा गया है?

उत्तर: वास्तविक दान प्रतिभा और समय का दान है, क्योंकि ईश्वर ने यह संपत्ति सभी को समान रूप से दी है। धनदान को केवल एक प्रतीक माना गया है क्योंकि इसका दुरुपयोग हो सकता है और इसका प्रभाव उल्टा भी पड़ सकता है। प्रतिभा और समय के दान से ही धन जैसे साधन उत्पन्न होते हैं और यही सच्चा दान है।

प्रश्न 3: हरिश्चन्द्र, कर्ण और दधीचि जैसे महापुरुषों की कथाएँ हमें क्या सिखाती हैं?

उत्तर: हरिश्चन्द्र, कर्ण, बलि और दधीचि जैसे महापुरुषों की कथाएँ हमें यह सिखाती हैं कि मनुष्य की इच्छाशक्ति ही अंत में प्रबल होती है, भले ही परिस्थितियाँ कितनी भी विपरीत क्यों न हों। ये कथाएँ समर्पण और देने के महत्व को स्थापित करती हैं, जो पुण्य का मार्ग है। इन्होंने अपनी इच्छाशक्ति से दान और त्याग के उच्चतम आदर्श प्रस्तुत किए।

प्रश्न 4: लेखक के अनुसार, दुनिया में सम्मान और सहयोग किन्हें मिलता है?

उत्तर: दुनिया का सम्मान और सहयोग उन लोगों के लिए सुरक्षित है जो देते बहुत हैं, लेकिन बदले में कम पाकर भी अपना काम चला लेते हैं। कम देना और अधिक पाने की इच्छा रखने वाले लोग प्रवंचक (धोखेबाज़) और पाखण्डी होते हैं। देने की उदारता ही व्यक्ति को सम्मान का पात्र बनाती है।

प्रश्न 5: दान शब्द का दुरुपयोग कैसे होता है? कुछ उदाहरण दें।

उत्तर: दान शब्द का दुरुपयोग कई भ्रामक रूपों में होता है। जैसे, आयकर बचाने के लिए किसी संस्था को दिया गया पैसा, यश पाने के लिए किया गया खर्च, या मनोरंजन के लिए पार्क बनवाना भी दान कह दिया जाता है। यहाँ तक कि रिश्तत को भी उदारतापूर्वक दी गई राशि कहकर दान मान लिया जाता है, जो कि इसका गलत उपयोग है।

अध्याय 2: अवसर प्रमाद बरतने का है नहीं

प्रश्न 1: मनुष्य अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ होते हुए भी दुखी क्यों है?

उत्तर: मनुष्य सृष्टि के सभी प्राणियों में सबसे श्रेष्ठ और सुसम्पन्न है, फिर भी वह दुखी है क्योंकि वह वासना, तृष्णा (लालच) और अहंता (अहंकार) के बंधनों में बुरी तरह जकड़ा हुआ है। वह हमेशा "और अधिक चाहिए" की सोच में उलझा रहता है और मकड़ी की तरह अपने ही बुने जाल में फँसकर कष्ट पाता है।

प्रश्न 2: लेखक ने मनुष्य के व्यवहार की तुलना किन मूर्ख प्राणियों से की है?

उत्तर: लेखक ने मनुष्य के लालची व्यवहार की तुलना कई मूर्ख प्राणियों से की है। जैसे, जलते दीपक पर झपटकर पंख जला लेने वाला पतंगा, बिना परिश्रम चारा खाने के लालच में जाल में फँसने वाली चिड़िया और

मछली, तथा सूखी हड्डी चबाकर अपने ही खून को रस समझने वाला कुत्ता। यह दर्शाता है कि बुद्धिमान होते हुए भी मनुष्य लालच में आत्मघाती व्यवहार करता है।

प्रश्न 3: मनुष्य की बुद्धिमत्ता को किन दो भागों में बाँटा गया है?

उत्तर: बुद्धिमत्ता को दो भागों में बाँटा गया है। पहला बहिरंग पक्ष है, जो दुनिया में किसी भी तरह (नीति या अनीति से) सफलता पाने पर जोर देता है। दूसरा अन्तरंग पक्ष है, जिसमें समझदारी, ईमानदारी और जिम्मेदारी जैसी मर्यादाओं को प्रमुखता दी जाती है और अपनी तरह दूसरों के हितों का भी ध्यान रखा जाता है।

प्रश्न 4: जीवन के तीन प्रमुख प्रश्न क्या हैं जिनका उत्तर हर विवेकवान व्यक्ति को खोजना चाहिए?

उत्तर: हर विवेकवान व्यक्ति को तीन प्रमुख प्रश्नों का उत्तर खोजना चाहिए:

1. ईश्वर ने यह दुर्लभ मनुष्य जीवन किस उद्देश्य के लिए दिया है?
2. जो साधन और वैभव प्राप्त हैं, उनका आज की परिस्थितियों में सर्वश्रेष्ठ उपयोग क्या हो सकता है?
3. मृत्यु के बाद ईश्वर के दरबार में अपने जीवन के कार्यों का विवरण किस रूप में प्रस्तुत करना होगा?

प्रश्न 5: लेखक क्यों कहते हैं कि यह तुरंत निर्णय लेने का समय है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, यह एक असाधारण समय है जहाँ एक ओर उत्थान है और दूसरी ओर पतन। ऐसे समय में तुरंत निर्णय लेना आवश्यक है, जैसे आग बुझाने या ट्रेन छूटने के समय फुर्ती दिखानी पड़ती है। हनुमान, बुद्ध और अर्जुन जैसे महापुरुषों ने सही समय पर तुरंत निर्णय लेकर ही गौरव प्राप्त किया था।

अध्याय 3: अभूतपूर्व अवसर जिसे चूका न जाए

प्रश्न 1: युग संधि की बेला का क्या महत्व है?

उत्तर: युग संधि की बेला एक असाधारण अवसर है, जब एक युग समाप्त हो रहा है और दूसरा आरंभ हो रहा है। यह वह समय है जब मनुष्य जाति का भाग्य नए सिरे से लिखा जा रहा है। इस समय हर व्यक्ति को यह तय करना है कि इस महान परिवर्तन में उसकी भूमिका क्या होगी, क्योंकि बाद में कुछ करने का अवसर नहीं मिलेगा।

प्रश्न 2: दीपक का उदाहरण देकर लेखक क्या समझाना चाहते हैं?

उत्तर: लेखक दीपक का उदाहरण देकर यह समझाना चाहते हैं कि जैसे एक छोटा दीपक अपने तेल-बत्ती को दाँव पर लगाकर भी घने अँधेरे को मिटाता है, वैसे ही हमें भी अपनी क्षमताओं का उपयोग करके समाज में बदलाव लाना चाहिए। हमारा मूल्य एक दीपक से कम नहीं है, बस हमें अपनी कृपणता (कंजूसी) को त्यागकर आगे बढ़ना होगा।

प्रश्न 3: हनुमान और नारद का उदाहरण क्यों दिया गया है?

उत्तर: हनुमान और नारद का उदाहरण यह बताने के लिए दिया गया है कि जो ईश्वर के काम में सहायक बनता है, वह स्वयं पूजनीय हो जाता है। हनुमान ने कठिन समय में राम की सहायता की, इसलिए आज उनके उपासक राम-भक्तों से भी अधिक हैं। नारद ने ईश्वर की भक्ति का प्रचार किया, इसलिए वे देवर्षि कहलाए।

प्रश्न 4: इक्कीसवीं सदी को 'उज्ज्वल भविष्य' क्यों कहा गया है?

उत्तर: इक्कीसवीं सदी को 'उज्ज्वल भविष्य' इसलिए कहा गया है क्योंकि यह ईश्वर की इच्छा है कि इस सड़ी-गली दुनिया को बदला जाए और एक नया श्रेष्ठ युग बनाया जाए। यह मनुष्य में देवत्व के उदय और प्रतिभा के परिष्कार का महाअभियान है। जो इस दैवीय इच्छा की पूर्ति में सहायक बनेंगे, वे स्वयं को कृतार्थ अनुभव करेंगे।

अध्याय 4: समयदान-महादान

प्रश्न 1: समयदान को महादान क्यों कहा गया है?

उत्तर: समयदान को महादान इसलिए कहा गया है क्योंकि समय एक ऐसी ईश्वरीय संपत्ति है जो सभी को समान रूप से मिली है। धन तो कुछ ही लोगों के पास होता है, लेकिन समय सबके पास है। समयदान में व्यक्ति की गहरी रुचि और श्रद्धा का भाव जुड़ा होता है, जिससे महान कार्य संभव होते हैं।

प्रश्न 2: भारत की पुरातन गरिमा का मुख्य कारण क्या था?

उत्तर: भारत की पुरातन गरिमा का मुख्य कारण साधु-ब्राह्मणों और वानप्रस्थों का वर्ग था, जो न्यूनतम साधनों में जीवन जीते थे और अपना सारा समय लोक-मंगल के कार्यों में लगाते थे। उनकी सेवा-साधना से ही देश में आदर्शवादिता और उत्कृष्टता का वातावरण बना रहा, जिससे भारत 'स्वर्गादपि गरीयसी' (स्वर्ग से भी महान) कहलाया।

प्रश्न 3: वानप्रस्थ परंपरा क्या थी और इसका समाज पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर: वानप्रस्थ एक महान परंपरा थी जिसमें व्यक्ति जीवन का आधा हिस्सा पारिवारिक जिम्मेदारियों में लगाने के बाद शेष आधा जीवन लोक-मंगल के लिए समर्पित कर देता था। हर घर से एक व्यक्ति पूरे समय के लिए समाज सेवा में लगता था, जिससे समाज में आदर्शवादिता बनी रहती थी और भारत ज्ञान, विज्ञान और संपन्नता में विश्वगुरु बना।

प्रश्न 4: सच्चा समयदान कब संभव हो पाता है?

उत्तर: सच्चा समयदान तभी संभव होता है जब व्यक्ति के मन की गहराई में आदर्शों पर चलने के लिए एक बेचैन करने वाली टीस (दर्द) उठती हो। ऐसे लोग अपने लक्ष्य की ओर हर बाधा को अनदेखा करते हुए तीर की तरह बढ़ते हैं। प्रलोभन और रुकावटें उन्हें रोक नहीं पातीं।

प्रश्न 5: पाखण्डी व्यक्ति को अभागा क्यों कहा गया है?

उत्तर: पाखण्डी व्यक्ति को अभागा इसलिए कहा गया है क्योंकि उसका छल देर-सवेर सामने आ ही जाता है। जब लोगों को उसकी असलियत पता चलती है, तो सभी उसका साथ छोड़ देते हैं। बुरे दिनों में भी उसका साथ देने वाला कोई मित्र या सहयोगी नहीं बचता, इसलिए वह सबसे बड़ा अभागा है।

अध्याय 5: दृष्टिकोण बदले तो परिवर्तन में देर न लगे

प्रश्न 1: आज के समय का सबसे बड़ा संकट क्या है?

उत्तर: आज के समय का सबसे बड़ा संकट 'आस्था संकट' या 'बुद्धि विपर्यय' है। इसका अर्थ है कि लोगों का दृष्टिकोण इतना विकृत हो गया है कि उन्हें सही-गलत का भेद नहीं पता। वे एकता, सहयोग और ईमानदारी जैसे सही रास्ते को छोड़कर स्वार्थ, अहंकार और अनीति के गलत रास्ते पर चल रहे हैं।

प्रश्न 2: विकृत चिंतन समाज को कैसे प्रभावित करता है?

उत्तर: विकृत चिंतन समाज में सामाजिक विकृतियों को जन्म देता है, जैसे पाचन तंत्र खराब होने पर शरीर में अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं। मनुष्य के सारे कार्य उसकी सोच पर निर्भर करते हैं। जब सोच ही गलत हो जाती है, तो उसके कार्य भी गलत हो जाते हैं, जिससे समाज में अशांति, गरीबी और बीमारियाँ बढ़ती हैं।

प्रश्न 3: विचारक्रांति से लेखक का क्या तात्पर्य है?

उत्तर: विचारक्रांति से लेखक का तात्पर्य है लोगों के गलत विचारों और दृष्टिकोण को बदलना। जैसे प्रजातंत्र

और साम्यवाद की विचारधाराओं ने दुनिया के बड़े हिस्से को प्रभावित किया, उसी तरह शालीनता की पक्षधर विचारक्रांति लोगों के मन से स्वार्थ और संकीर्णता हटाकर उन्हें सामाजिक प्राणी बनने के लिए प्रेरित करती है।

प्रश्न 4: विचारक्रांति को सफल बनाने के लिए विभिन्न प्रतिभाशाली व्यक्तियों को क्या योगदान देना चाहिए?

उत्तर: विचारक्रांति के लिए मनीषियों को अपनी लेखनी और वाणी का प्रयोग करना चाहिए, वक्ताओं को ओजस्वी वाणी से लोगों को प्रेरित करना चाहिए, और धनिकों को अपनी संपत्ति युग-धर्म के लिए समर्पित करनी चाहिए। नेतृत्व करने की क्षमता रखने वालों को बुद्ध और गाँधी की तरह समाज को सही मार्गदर्शन देना चाहिए।

अध्याय 6: प्रभावोत्पादक समर्थता

प्रश्न 1: उपदेशकों की बातें लोगों पर प्रभाव क्यों नहीं डालतीं?

उत्तर: उपदेशकों की बातें लोगों पर इसलिए प्रभाव नहीं डालतीं क्योंकि उनकी कथनी और करनी में अंतर होता है। लोग उपदेश सुनने से ज़्यादा यह देखते हैं कि कहने वाला स्वयं उस पर कितना अमल करता है। जब उपदेशक खुद अपने आदर्शों का पालन नहीं करता, तो लोग उसे ठग समझते हैं और उसकी बातों पर विश्वास नहीं करते।

प्रश्न 2: कथनी और करनी की एकता का क्या महत्व है?

उत्तर: कथनी और करनी की एकता अत्यंत महत्वपूर्ण है। जैसे बिजली के दो तार मिलने पर ही करंट आता है, वैसे ही कथनी और करनी के मिलने से ही उपदेश में शक्ति आती है। बुरे लोग भी अपने साथियों को इसलिए प्रभावित कर पाते हैं क्योंकि उनकी कथनी-करनी एक होती है। आदर्शों के लिए भी यही प्रामाणिकता आवश्यक है।

प्रश्न 3: युग परिवर्तन के दो प्रमुख चरण कौन-से हैं?

उत्तर: युग परिवर्तन के दो प्रमुख चरण हैं। पहला चरण 'विचारक्रांति' है, जिसमें तर्क और प्रमाण के आधार पर लोगों को गलत मान्यताओं से निकालकर विवेकशील बनाया जाता है। दूसरा चरण 'प्रतिभा परिष्कार' है, जो एक क्रियात्मक परिवर्तन है। इसमें दुष्प्रवृत्तियों को मिटाने और सत्प्रवृत्तियों को बढ़ाने के लिए साहसी प्रयास किए जाते हैं।

प्रश्न 4: सबसे प्रभावी समयदान किसे कहा गया है?

उत्तर: सबसे प्रभावी समयदान वह है जिसमें समय, श्रम (मेहनत) और संकल्प (दृढ़ इच्छा) का त्रिवेणी संगम हो। केवल समय देना ही काफी नहीं है, उसके साथ कठोर मेहनत और आदर्शों के प्रति अटूट समर्पण की भावना भी होनी चाहिए। ऐसा समयदान ही युग परिवर्तन जैसी महान प्रक्रिया को संभव बना सकता है।

अध्याय 7: प्रामाणिकता और प्रखरता ही सर्वत्र अभीष्ट

प्रश्न 1: मनुष्य को बाँधने वाली तीन जंजीरें कौन-सी हैं?

उत्तर: मनुष्य को भव-बंधनों में बाँधने वाली तीन प्रमुख जंजीरें हैं—लोभ (या तृष्णा), मोह (या वासना), और अहंकार। लोभ के कारण व्यक्ति धन के पीछे भागता है, मोह के कारण वह परिवार में इतना उलझ जाता है कि परमार्थ के लिए समय नहीं निकाल पाता, और अहंकार उसे दूसरों से जुड़ने नहीं देता।

प्रश्न 2: 'महावीर' की परिभाषा क्या दी गई है?

उत्तर: जो दूसरों के अवगुणों पर विजय प्राप्त कर लेता है, वह 'वीर' कहलाता है। लेकिन उससे भी श्रेष्ठ 'महावीर' वह है जिसने स्वयं अपने अवगुणों और अपनी कमजोरियों पर विजय प्राप्त कर ली हो। ऐसे ही आत्म-विजयी महामानव समाज में आदर्श स्थापित करते हैं और सभी की श्रद्धा के पात्र बनते हैं।

प्रश्न 3: इक्कीसवीं सदी में कैसे लोगों की आवश्यकता बताई गई है?

उत्तर: इक्कीसवीं सदी के नवनिर्माण जैसे बड़े कार्यों के लिए ऐसे लोगों की आवश्यकता है जो मनोबल के धनी और चरित्र में श्रेष्ठ हों। जैसे खरे सोने की ही पूरी कीमत मिलती है, वैसे ही बड़े कामों के लिए प्रामाणिक और प्रखर व्यक्तित्व वाले लोगों की ही जरूरत होती है। प्रतिभा परिष्कार अभियान ऐसे ही लोगों को तैयार करने के लिए चलाया जा रहा है।

अध्याय 8: समय का एक बड़ा अंश, नवसृजन में लगे

प्रश्न 1: आज का युग-धर्म क्या है?

उत्तर: आज का युग-धर्म है—जन-जागरण के लिए प्रचंड पुरुषार्थ में जुट जाना। इसका अर्थ है कि सभी प्रतिभाशाली व्यक्तियों को समाज में व्याप्त अज्ञानता और गलत प्रचलनों को दूर करने के लिए पूरी शक्ति से प्रयास करना चाहिए। इसके लिए विचार परिष्कार सबसे आवश्यक कदम है।

प्रश्न 2: विचार परिष्कार के लिए किन माध्यमों का उपयोग करने की बात कही गई है?

उत्तर: विचार परिष्कार के लिए दृश्य और श्रव्य दोनों माध्यमों का उपयोग करने की बात कही गई है। इसमें युग-साहित्य को झोला पुस्तकालयों और ज्ञान रथों के माध्यम से घर-घर पहुँचाना, दीप यज्ञों द्वारा युग चेतना का प्रकाश फैलाना, और टेप रिकॉर्डर व संगीत के माध्यम से घर-घर तक अच्छे विचार पहुँचाना शामिल है।

प्रश्न 3: युग निर्माण योजना के चार प्रमुख कार्यक्रम कौन-से हैं?

उत्तर: युग निर्माण योजना के चार प्रमुख कार्यक्रम हैं:

1. शिक्षा: हर शिक्षित व्यक्ति न्यूनतम दो अशिक्षितों को शिक्षित बनाए।
2. नारी जागरण: महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वावलंबन की दृष्टि से सशक्त बनाना।
3. नशा-निवारण: समाज को नशा मुक्त बनाने के लिए प्रतिज्ञा करना और लोगों को जागरूक करना।
4. विवाहों में सादगी: दहेज और फिजूलखर्ची को रोककर विवाह को एक आदर्श संस्कार बनाना।

अध्याय 9: प्राणवान प्रतिभाएँ यह करेंगी

प्रश्न 1: विचारक्रांति के लिए साहित्य सृजन के अलावा और क्या आवश्यक है?

उत्तर: विचारक्रांति के लिए केवल साहित्य सृजन ही पर्याप्त नहीं है। तीन-चौथाई अशिक्षित जनता तक विचारों को पहुँचाने के लिए दृश्य और श्रव्य माध्यमों का उपयोग करना आवश्यक है, जैसे—पत्रिकाएँ, पोस्टर, स्लाइड प्रोजेक्टर, संगीत, और अभिनय। इन माध्यमों को इतना व्यापक बनाना होगा कि हर भाषा के लोग इसका लाभ उठा सकें।

प्रश्न 2: प्रचार के बाद दूसरा महत्वपूर्ण चरण क्या है और क्यों?

उत्तर: प्रचार के बाद दूसरा महत्वपूर्ण चरण 'प्रशिक्षण' है। इसका उद्देश्य लोगों की पुरानी गलत आदतों,

मान्यताओं और परंपराओं को बदलकर उन्हें नए युग के अनुरूप ढालना है। यह कार्य एक विशेष शिक्षण प्रणाली द्वारा ही संभव है जो लोगों के व्यवहार में वास्तविक परिवर्तन ला सके।

प्रश्न 3: अंशदान और समयदान के लिए क्या अपेक्षा की गई है?

उत्तर: युग सृजन के लिए हर व्यक्ति से समयदान और अंशदान की अपेक्षा की गई है। सामान्य व्यक्ति से प्रतिदिन दो घंटे का समयदान और विशिष्ट व्यक्तियों से पूरा जीवन समर्पित करने की आशा की गई है। अंशदान के लिए महीने में एक दिन की कमाई नव निर्माण के कार्यों के लिए नियमित रूप से निकालने का आग्रह किया गया है।

अध्याय 10: अग्रदूत बनें, अवसर न चूकें

प्रश्न 1: युग परिवर्तन के पराक्रम में कौन-सी दो शक्तियाँ काम करेंगी?

उत्तर: युग परिवर्तन के इस महान कार्य में दो शक्तियाँ प्रमुख रूप से काम करेंगी। पहली, प्रतिभावान मनुष्यों का पराक्रम और पुरुषार्थ। दूसरी, सृष्टा की अदृश्य दैवी सत्ता, जो प्रतिकूलताओं को अनुकूलता में बदलने में सहयोग करेगी। इन दोनों के मिलने से ही यह महाक्रांति सफल होगी।

प्रश्न 2: युग निर्माण परिवार का लक्ष्य क्या है और उसे कैसे पूरा किया जाएगा?

उत्तर: युग निर्माण परिवार का लक्ष्य एक करोड़ ऐसे साधक तैयार करना है जो नवयुग के निर्माण में भागीदार बनें। यह लक्ष्य 'एक से पाँच, पाँच से पच्चीस' की योजना के तहत पूरा किया जाएगा, जिसमें हर परिजन अपने साथ नए लोगों को जोड़ेगा। ये सभी साधक इक्कीसवीं सदी के आरंभ में पूर्णाहुति के समय एकत्रित होकर भावी कार्यों का संकल्प लेंगे।

प्रश्न 3: लेखक के अनुसार इस अलभ्य अवसर को चूकने का क्या परिणाम होगा?

उत्तर: लेखक के अनुसार, यह एक ऐतिहासिक और दुर्लभ अवसर है। जो लोग इस अवसर पर आलस्य या लापरवाही के कारण युग-धर्म के निर्वाह (समयदान-अंशदान) से चूक जाएँगे, उन्हें जीवन भर यह पश्चाताप कचोटता रहेगा कि एक महान अवसर आया था और उन्होंने उसे गँवा दिया।